* ॐ *

श्री हरदत्ताचार्यकृत

हरिहर तारतम्यस्तोत्रम्

अनुवादक:

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त
श्री विभूषित यतीन्द्रकुलतिलक महामण्डलेश्वर श्री
स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

सम्पादक:

लोकेशानन्द शास्त्री

प्रकाशक
कैलाश आश्रम
ऋषिकेश, मुनिकी रेती
जि० देहरादून, (उ० प्र०)

वसंत पञ्चमी
वि० सं० २०२९ ई० सन् १९७३
२००० प्रति

मुद्रक : जयभारत प्रेस
बाँस फाटक वाराणसी

ॐ

प्राक्कथन

सनातन धर्म परम्परा में पञ्चदेवोपासना श्रेष्ठ मानी गयी है। वे पञ्चदेव गणेश, गौरी, शिव, विष्णु तथा सूर्य इन नामों से श्रुति, स्मृति इतिहास पुराणों में कहे गये हैं। अपनी भावना के अनुसार कोई उपासक उक्त पञ्चदेवों में से किसी एक को प्रधान मानकर शेष को उनका अङ्ग मान सकता है। इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है। फिर भी मध्यकाल में शैव एवं वैष्णवों का परस्पर कलह अत्यन्त उपहासास्पद तथा अनावश्यक रहा है। जिससे समाज में वातावरण अत्यन्त दूषित होता रहा है। भगवान शंकराचार्य के परावतार आचार्य भगवत्पाद शंकराचार्य ने केवलाद्वैत सिद्धान्त के साथ ही उक्त पञ्च देवोपासना का समन्वय सम्यक् प्रकार से किया है। इन्हीं के पथानुगामी कुछ भाषा के कवियों ने भी समन्वय वाद का अनुसरण किया। फिर भी सम्प्रदाय में दुराग्रह रखने वाले लोगों ने मनोमालिन्य दूर नहीं किया। समन्वयवाद पक्ष का अनुसरण करते हुए किसी अभियुक्त ने ठीक ही कहा है—

विष्णुं समाराधय शंकरं वा भक्तिप्रधानं न च देवभेदः।
पानं सुधाया अमृतत्वहेतुः पात्रं न हेम्नोः न च राजतं वा ॥

(चाहे विष्णु की आराधना या शिव की आराधना करो इन दोनों में भेद नहीं है, भक्ति ही उपासना में प्रधान मानी गयी है। अमृत का पान ही अमृतत्व का कारण है; उसे भले ही सोने के कटोरे में पीओ अथवा चाँदी के कटोरे में पीओ।)

इस समन्वय पक्ष के अनुसार दोनों ने अद्वितीय सच्चिदानन्द ब्रह्म का लक्ष्य ही प्रधान प्रयोजन है ऊपाधि में आग्रह करके परस्पर कलह से कोई लाभ नहीं है।

ऐसे ही समन्वयवाद पक्ष का अनुसरण प्रस्तुत हरिहर तारतम्यं स्तोत्र में किया गया है। इसके रचयिता श्री हरदत्ताचार्य जी ने शिव एवं विष्णु के अनेक चरित्रों का संकलन करते हुए विवेकशील वृद्धों के ऊपर ही दायित्व छोड़ दिया है कि वे निर्णय दें कि किस की भक्ति करें ? सम्भव है शिवभक्त को इसमें शिव की उत्कृष्टता प्रतीत हो पर ग्रन्थकार ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। यह श्री हरदत्तचार्य जी की एक अनुपम विशेषता है।

इस ग्रन्थ के लेखक श्री हरदत्ताचार्य कौन थे ? यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। फिर भी जहाँ तक

हमने अन्वेषण किया, उससे यही सिद्ध होता है कि पाणिनीय अष्टाध्यायी की काशिकावृत्ति पर 'पदमञ्जरी' टीका लिखने वाले हरदत्त ही इस स्तोत्र के रचयिता हो सकते हैं। क्योंकि 'पदमञ्जरी' टीका लिखते समय उन्होंने भगवान् शङ्कर को अपना इष्ट मानकर प्रणाम किया है। यथा—

"व्यक्तप्रधान पुरुषात्मक मस्वतन्त्रमेतत्समस्तमधितिष्ठति यः स्वतन्त्रः।
तस्मै शिवाय परमाय दशाव्ययाय साम्बाय सादरमयं विहितः प्रणामः॥"

ऐसे ही हरिहर तारतम्य स्त्रोत्र को देखते हुए यही प्रतीत होता है कि वह किसी असाधारण वैयाकरण की रचना हो सकती है। यथा—

'ज्योत्स्नातिनिर्मल विशुद्ध शरीरं' इति (हरिहर० ६) 'मयूरवर गहनपुत्रदृष्टिः' (हरिहर० १८ ॥ ऐसे समस्त पदों का एवं 'मन्यस्त्वयत्त बहुविश्वसृजाँ कपालान्' (हरिहर० २०) 'विश्वेश्वरत्वपदवीमयते' (हरिहर० ७०) इन वाक्यों में अधत्त और अयते आदि क्रियाओं को देखने से भी यही निश्चित प्राय है कि इनके रचयिता असाधारण

वैयाकरण रहे हैं। अतः पदमञ्जरीकार हरदत्त ही इस स्तोत्र के रचयिता हैं।

हरिहर तारतम्यस्तोत्र की पाण्डुलिपि श्री कैलास आश्रम पुस्तकालय ऋषिकेश में बहुत समव से सुरक्षित रखो हुई थी। परम श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी हरिहर तीर्थ जी महाराज ने उसके सम्बन्ध चर्चा की : साथ ही यह भी कहा कि अनन्त श्री विभूषित स्वामी प्रकाशानन्द पुरी जी महाराज का यह अत्यन्त प्रिय स्तोत्र था। इसीलिये उन्होंने इसे पुस्तकालय में बड़ी सावधानी से रखा। सम्भवतः इसका प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ क्योंकि प्रत्यन करने पर भी किसी प्रकाशक की सूची में इसका नाम नहीं मिला। अतः इसके प्रकाशन एवं प्रचार को आवश्यक समझकर हमने इसे मूलमात्र छपवाने का विचार किया था किन्तु अनेक भक्तों के आग्रह से अनुवाद सहित इसे प्रकाशित करवाया जा रहा है। आशा है सानुवाद हरिहरतारतम्यस्तोत्र से शिव विष्णु समन्वय पक्ष का प्रभूत प्रचार जनता में होगा।

इत्योम् शम्। भगवत्पादीयः

दीपावली २०२९ स्वामी विद्यानन्द गिरि जी

ॐ नमः शिवाय

अथ हरिहर तारतम्यम्

—*०*—

एकस्समुद्रसलिले वटपत्र शायी,
त्वन्यस्ससमुद्रशरधिस्त्रिपुर प्रभेत्ता ।
को वानयोरधिकइत्यनुचिन्त्य वृद्धाः,
सत्यं ब्रुवन्तु तमिमं वयमाश्रयामः ॥ १ ॥

एक भगवान विष्णु प्रलय कालीन अपार समुद्र जल में अक्षयवट के पत्ते पर बाल रूप से सोते हैं, तो दूसरे भगवान शङ्कर अथाह समुद्र को तरकस बना कर त्रिपुरासुर का भेदन करते हैं। विचारशील वृद्ध पुरुष अच्छी प्रकार विचार कर सत्य कहें कि इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है। तब हम उसी का आश्रय लेवें यानि भजन करें॥ १ ॥

सूनुञ्चकार चतुराननमेव चैकः,
सूतञ्चकार चतुराननमेव चान्यः ।
को वानयोरधिकः— ॥ २ ॥

एक ने चार मुखवाले ब्रह्मा को ही अपना पुत्र बनाया, तो दूसरे ने उसी ब्रह्मा को त्रिपुरासुर के मारते समय अपने रथ का वाहक बना दिया। इन दोनो में श्रेष्ठ कौन है इसे विचार कर वृद्ध पुरुष सत्य कहें, जिससे कि हम उसी की शरण लेवें ॥ २ ॥

एकः पुनर्भुवि दधौ नवनीतखण्डम-
न्यो दधौ नवसुधामयचन्द्रखण्डम् ।
को वानयोरधिकः— ॥ ३ ॥

एक ने भूलोक में नवनीत खण्ड (मक्खन के गोले) को धारण किया, तो दूसरे ने नूतन अमृतमय चन्द्र खण्ड को धारण किया ॥ ३ ॥

एकः सहस्रकमलैर्यमुपार्च्य तस्था
वन्यस्तु वैरुपचितस्सुमुमोद तस्मात् ।
को वानयो रधिकः— ॥ ४ ॥

एक भगवान विष्णु ने सहस्र कमलों से जिनकी पूजा कर सामने भक्ति भाव से स्थित हुए, तो दूसरे भगवान शंकर उन कमलों से पूजित हो प्रसन्न हुए ॥ ४ ॥

एकोऽस्ति नन्दकुटिलव्रजमन्दिरेषु,
चान्योऽस्ति मेरुशिखर स्थितकन्दरेषु ।
को वानयोरधिकः— ॥ ५ ॥

एक बाबा नन्द के टेड़े मेढ़े व्रज मन्दिरों मे निवास करते हैं, तो दूसरे सुमेरु पर्वत की चोटी पर स्थित गुफाओं में निवास करते हैं ॥ ५ ॥

गाढ़ान्धकार घननील शरीर एको,
ज्योत्स्नातिनिर्मल विशुद्ध शरीर एकः ।

को वानयो रधिकः— ॥ ६ ॥

एक घोर अन्धकार के समान अत्यन्त श्यामले शरीर वाले हैं, तो दूसरे निर्मल ज्योति के समान विशुद्ध शरीर वाले हैं ॥ ६ ॥

एकः कुमारमभजत्सुतरामनङ्ग-
मन्यः प्रयाति किल शक्तिधरं कुमारम् ।
को वानयो रधिकः ॥ ७ ॥

एक ने शरीर रहित कामदेव को निःसन्देह अपने पुत्र रूप से प्राप्त किया, तो दूसरे ने शक्ति धारण करने-वाले कार्तिकेय को पुत्र रुप से प्राप्त किया ॥ ७ ॥

स्त्रीरूपमाप किल पूर्वमभीष्ट मेक-
स्त्वन्यस्तमेव भजते पुरुषः स्वरस्यै ।
को वानयोरधिकः ॥ ८ ॥

एक ने असुरों को मोहित करने के लिए पहले अभीष्ट स्त्री रूप धारण किया, तो दूसरे ने पुरुष रूप धारण कर उसी का आलिङ्गन किया ॥ ८ ॥

मुष्णाति वल्लभगृहे नवनीतमेक-
श्चान्यो ददाति सुधियां परमामृतं तत् ।
को वानयोरधिकः ॥ ६ ॥

प्रिय गोप भक्तों के घर में एक मक्खन को चुराता है, तो दूसरा विवेकशील पुरुषों को अत्यन्त अमृतमय ज्ञान प्रदान करता है ॥ ९ ॥

एकः प्रयाति हि सकाम इति प्रसिद्धि-
मन्योऽगमन्निहत काम इतिप्रसिद्धिम् ।
को वानयोरधिकः ॥ १० ॥

एक सकामतारूप प्रसिद्धि को प्राप्त करता है, तो दूसरा कामदेव को जला कर कामारि रूप प्रसिद्धि को प्राप्त करता है ॥ १० ॥

एकोविभाति रविचन्द्रसमद्विनेत्र-
स्त्वन्योऽरविन्द सख सोमशिखित्रिनेत्रः ।
को वानयोरधिकः ॥ ११ ॥

एक सूर्य और चन्द्र के समान दो नेत्रवाला है, तो दूसरा सूर्य चन्द्र और अग्निरूप तीन नेत्रों वाला है ॥ ११ ॥

गोपालकत्वमधिगम्य विभाति चैक-
स्त्वन्यो वृषाधिपतिनायक इत्यभाणि ।
को वानयोरधिकः ॥ १२ ॥

गोप भाव को प्राप्त कर एक सुशोभित होता है, तो दूसरा गौओं के अधिपति भगवान नन्दी का नायक कहा जाता है ॥ १२ ॥

एको ह्यगाधतरदुग्धनिधौ निमग्नः
कैलासशैलशिखरे खलु वर्ततेऽन्यः ।
को वानयोरधिकः ॥ १३ ॥

एक अत्यन्त अगाध क्षीर समुद्र मे निमग्न रहता है, तो दूसरा कैलाश पर्वत की शिखर पर वर्तमान है ॥ १३ ॥

एकस्तु नैल्यमुपयाति शरीरमात्रे-
ह्यन्यस्तु नैल्यमुपयच्छति कण्ठमात्रे ।
को वानयोरधिकः··· ॥ १४ ॥

एक सारे शरीर में नीलिमा को धारण करता है, तो दूसरा केवल कण्ठ में नीलिमा को धारण करता है ॥ १४॥

एकः सदाष्ट महिषीरुपयातिशीघ्र—
मन्यो बिभर्ति नितरामिति चाष्टमूर्तीः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ १५ ॥

एक सदाशीघ्र आठ पटरानियों को प्राप्त करता है, तो दूसरा पृथिव्यादि अष्ट मूर्ति को धारण करता है ॥ १५ ॥

एको लुठत्यनुदिनं यमुनाजलौघे—
ष्वन्यो दधाति शिरसा महतीं च गङ्गाम् ।
को वानयोरधिकः ॥ १६ ॥

एक यमुना जल में प्रतिदिन लोट पोट (कूदता है) करता है, तो दूसरा महान गंगा को अपने शिर पर धारण करता है ।। १६ ।।

एकस्सुवर्ण वसनं निदधाति कट्या—
मन्यः सुवर्णगिरिचाप मधात्कराग्रे ।
को वानयोरधिकः··· ।। १७ ।।

एक सोने के समान चमकीले वस्त्र को कमर में धारण करता है, तो दूसरा हाथ में सुवर्ण गिरि का धनुष धारण करता है ।। १७ ।।

एको दधौ शिरसि बर्हिणपिच्छमात्र—
मन्योमयूरवर वाहन पुत्रदृष्टिः ।
को वानयोरधिक··· ।। १८ ।।

(मयूरश्रेष्ठवाहनो गुहो यस्याग्ने पुत्रः,
स दृष्टिश्चक्षुर्यस्य तत्तथा ।
दृष्टि मिति पाठे धारण क्रियाकर्मत्वं बोध्यम् ।)

एक अपने शिर पर केवल मोरपंख को धारण करता है, तो दूसरा—मोर रूप श्रेष्ठ वाहन है पुत्र जिसका, ऐसी—अग्नि को नेत्ररूप से धारण करता है ॥ १८ ॥

एकोदधाति हृदि कौस्तुभरत्नमेक—
मन्यस्सहस्रसुफणामणिरत्न हारम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ १९ ॥

एक हृदय में केवल एक कौस्तुभ रत्न का धारण करता है, तो दूसरा सहस्र सुन्दर फण वाले सर्पमणि के रत्नों को हार वना लेता है ॥ ९ ॥

एकः करेण धृतवानिह पाञ्चजन्य—
मन्यस्त्वधत्त बहुविश्व सृजां कपालान् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २० ॥

एक यहाँ पर पाञ्चजन्य नामक शंख को हाथ में रखता है, तो दूसरा विश्व स्रष्टा ब्रह्मा के कपालों को धारण करता है ॥ २० ॥

एको व्रजेषु कुरुते मृदुवेणुनाद—
मन्यो लपेषु कुरुते विकटाट्टहासम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २१ ॥

एक व्रज में सुन्दर वेणुनाद करता है, तो दूसरा प्रतिवार्तालाप में विकट अट्टहास करता है ॥ २१ ॥

पक्षीन्द्र वाहन इति प्रथितोऽयमेक—
स्त्वन्यो महोक्ष वर वाहन इत्यभिख्यः ।
को वानयोरधिक··· ॥ २२ ॥

गरुड़ सवारीवाला एक प्रसिद्ध है, तो श्रेष्ठ नन्दी सवारीवाला दूसरा कहा जाता है ॥ २२ ॥

एकस्तु योनिज इति व्रजति प्रसिद्धि—
मन्यस्त्वजात इति सर्वजगत्प्रसिद्धिम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २३ ॥

अवतार धारण करने पर मातृयोनि से उत्पन्न हुआ, ऐसी प्रसिद्धि को एक प्राप्त करता है, तो दूसरा

अजन्मा है, ऐसी प्रसिद्धि को सम्पूर्ण जगत में प्राप्त करता है ॥ २३ ॥

एको ह्युलूखलनिबद्ध इति प्रसिद्ध—
स्त्वन्योबभूव भवपाश विमुक्तिदक्षः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २४ ॥

एक ऊखल से बँध गया यह बात प्रसिद्ध है, तो दूसरा भवबन्धन से मुक्त करने में अत्यन्त दक्ष है, यह भी प्रसिद्ध है ॥ २४ ॥

एकस्त्वनित्य इति सुप्रथितो जगत्या—
मन्यस्तु नित्य इति च श्रुतिलोकसिद्धः ।
को वानयोरधिक··· ॥ २५ ॥

संसार में यह अत्यन्त प्रसिद्ध है कि अवतार धारण कर एक आता है और चला जाता है । अतएव अनित्य है । किन्तु दूसरा सदा रहनेवाला है, यह बात लोक और वेद से सिद्ध है ॥ २५ ॥

एकस्तु पार्थ रथ वाजिकृतोपचर्य—
स्त्वन्यस्तु पार्थ समरप्रणुतप्रभावः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २६ ॥

अर्जुन के रथ के घोड़ों की सेवा एक ने की, किन्तु दूसरे अर्जुन के साथ समर में अर्जुन से स्तुति किये जाने पर महिमा को प्राप्त हुए ॥ २६ ॥

व्याप्तश्च विष्णुरयमित्यवगम्य एकोऽ—
न्यो विष्णुवल्लभ इति प्रथितस्त्रिलोक्याम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २७ ॥

विष्णु भगवान व्यापक हैं, इस प्रकार एक जानने योग्य है, तो दूसरे विष्णु के आराध्य होने से विष्णु-वल्लभ हैं। ऐसी प्रसिद्धि संसार में है ॥ २७ ॥

एको जनार्दन इति प्रकटीकृतोऽय—
मन्यस्तु शङ्कर इतिस्फुटमीर्यते हि ।
को वानयोरधिकः··· ॥ २८ ॥

एक जनार्दन (जन को नाश करने वाले), इस नाम से प्रसिद्ध हैं, तो दूसरे कल्याणकारक होने से शंकर नाम से प्रसिद्ध हैं ।। २८ ।।

भक्तं बलिं पुनरधः कृतवानिहैको
भक्तं कुबेरमकरोदधिकं श्रियाऽन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ।। २९ ।।

यहाँ पर एक ने भक्त बलि को छल करके नीचा दिखलाया, तो दूसरे ने भक्त कुबेर को लक्ष्मी से भरपूर कर दिया ।। २९ ।।

व्याध्यादिनीचहृतनैजवधूक एको
व्याधायितोऽपि निगमश्वभिराश्रितोऽन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ।। ३० ।।

व्याधादि नीच जाति वालों ने एक की पत्नियों का अपहरण किया, किन्तु दूसरे ने वेदरूपी कुक्कुरों को साथ ले स्वयं व्याधरूप धारण किया ।। ३० ।।

एकस्य सेवकजना भृशदग्धगात्रा
अन्यस्य शुभ्रमृदुपूतविभूतिरेखाः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ३१ ॥

एक के भक्तजन छाप लगाने के कारण अत्यन्त जले हुए शरीरवाले होते हैं, तो दूसरे के भक्तजन स्वच्छ कोमल एवं पवित्र भस्मि के धारण करने से विशुद्ध देह वाले होते हैं ॥ ३१ ॥

एको नितान्तमभवद्वटपत्रशायी
ह्यन्योहि तादृशमहावटमूलवासी ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ३२ ॥

एक हमेशा वटपत्र पर सोता है, तो दूसरा वैसे ही महान वटवृक्ष के मूल में निवास करता है ॥ ३२ ॥

एको दधौ सितमृदं तिलकं ललाटे ।
ह्यन्यो दधौ हुतवहं तिलकं ललाटे ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ३३ ॥

एक ललाट में सफेद मिट्टी (गोपी चन्दन) का तिलक धारण करता है, तो दूसरा ललाट में अग्नि का ही तिलक धारण करता है ।। ३३ ।।

एको दधाति तुलसीदलमालिकां हृद्य—
न्यो दधाति हि विधातृ कपालमालाम् ।
को वानयोरधिकः··· ।। ३४ ।।

एक हृदय में तुलसी की माला धारण करता है, तो दूसरा ब्रह्मा की खोपड़ी की माला धारण करता है ।। ३४ ।।

एको मृगग्रहणतो गहने चचार
स्त्वन्यो मृगं करतले निवहन् सदास्ते ।
को वानयोरधिकः ।। ३५ ।।

एक घोर वन में मृग को पकड़ने के लिए जाता है, तो दूसरा सदा अपने हाथ में मृग का वहन करता रहता है ।। ३५ ।।

एको दशास्यहृतनैजवधूक आसी—
दन्यो वधूविलसिताद्धंशरीर आसीत् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ३६ ॥

एक की पत्नि को रावण चुरा ले जाता है, तो दूसरा अर्द्धनारीश्व अपनी पत्नि को सदा आधे अंग में धारण करता है ॥ ३६ ॥

एकस्तु मर्कटभटेन ददाह लङ्का—
मन्यस्तु मन्दहसितेन पुरत्रयञ्च ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ३७ ॥

एक मरकटभट (हनुमान) के द्वारा लंका को जलाता है, तो दूसरा मन्दमुस्कुराहट से त्रिपुरासुर के तीनो पुरों को जला देता है ॥ ३७ ॥

एकस्तु मर्कटभटैर्निजकार्यकारी—
ह्यन्यस्सुरेन्द्रनिवहैर्निजकार्यकारी ।
को वानयोरधिकः ॥ ३८ ॥

एक मरकटभटों द्वारा अपने कार्य सिद्ध करते हैं, तो दूसरे देवताओं द्वारा अपना कार्य सिद्ध करते हैं ॥ ३८ ॥

एकस्तु मत्स्यतनुमेत्य गतोऽब्धितोय—
मन्यो निर्मथिततद्ध्वजवान् प्रसिद्धः ।
को वान्ययोरधिकः··· ॥ ३६ ॥

एक मत्स्य शरीर धारण कर अगाध समुद्र तल में जाते हैं, तो मत्स्यध्वज कामदेव को जला कर प्रसिद्ध हो जाते हैं ॥ ३९ ॥

इन्द्रानुजत्वमगमद्भुवि सर्वदैकः
इन्द्रादिभिः सुरगणैः परिपूज्यतेऽन्यः ।
को वान्ययोरधिकः··· ॥ ४० ॥

एक इन्द्र के छोटे भाई इस भूलोक में बनते हैं, तो दूसरे इन्द्रादि देवताओं द्वारा पूजित होते हैं ॥४०॥

एको नृसिंहतनुमेत्य जघानदैत्य—
मन्य स्तमेव हतवान्छरभावतारी ।

को वानयोरधिकः··· ॥ ४१ ॥

एक ने नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु दैत्य को मारा, तो दूसरे ने शरभ पक्षी रूप धारण कर उस नृसिंह को ही मार दिया ॥ ४१ ॥

एको बटुः कपट इत्यखिलैः प्रभाषि—
विद्या गुरुः परम इत्यभिधीयतेऽन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ४२ ॥

एक ने कपट बटु (वामन) रूप धारण किया, ऐसा सभी कहते हैं, तो दूसरे ने सर्वश्रेष्ठ विद्यागुरु आचार्य शंकर का रूप धारण किया, ऐसा भी कहते हैं ॥ ४२ ॥

एकस्य रावणवधे च दृढा हि शक्तिः—
रन्यस्य सर्वविलये सुदृढा हि शक्तिः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ४३ ॥

रावण के मारने में एक की शक्ति दृढ़ है, तो दूसरे की शक्ति सम्पूर्ण विश्व के विलय करने में सुदृढ़ है ॥ ४३ ॥

एकः प्रसिद्धतर एव हि वासुदेवो,
देवो महानिति परस्तु ततः प्रसिद्धः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ४४ ॥

एक वासुदेव नाग से अत्यन्त प्रसिद्ध है, तो दूसरा उसकी अपेक्षा भी महादेव नाम से अधिक प्रसिद्ध है॥ ४४ ॥

एकः पदेन शकटं सहसानुनोद,
चान्यः पदाङ्गुलि नखेन गिरिन्नुनोद ।
को वानयोरधिकः ॥ ४५ ॥

एक ने पैर से अकस्मात् शकट को गिरा दिया, तो दूसरे ने पैर की कनिष्ठिका अंगुली के नख से पर्वत को गिरा दिया॥ ४५ ॥

एकः पदत्रयमिदं त्रिजगच्चकार,
ह्यन्यः पदाङ्गुलिहतं च जगच्चकार ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ४६ ॥

एक ने तीनों लोकों को तीन पाद से माप डाला, तो दूसरे ने सम्पूर्ण संसार को पदाङ्गुलि से आहत कर डाला ॥ ४६ ॥

एकस्य शूकरजनिः सुलभास्तिहीना,
ह्यन्यस्तु चित् सुरभिरूप इति प्रसिद्धः ।
को वानयोऽधिकः ॥ ४७ ॥

अत्यन्त सुलभहीन सुअर शरीर को एक ने धारण किया, तो दूसरे ने चेतन सुरभिरूप को धारण किया । यह संसार में प्रसिद्ध है ॥ ४७ ॥

एको विभाति भृशमेकमुखाम्बुजेन,
ह्यन्यो विभाति खलु पञ्चमुखैरजस्रम् ।
को वानयोरधिकः ॥ ४८ ॥

एक सदा कमल सदृश एक मुख से सुशोभित होता है, तो दूसरा पाँच मुखों से सदा सुशोभित होता है ॥ ४८ ॥

एको गृहीतुमतिवाञ्छति वित्तहीनं
वित्तेशमेव कुरुते निजभक्तमन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ४९ ॥

एक पहले धनहीन बना लेता है, फिर उसे ग्रहण करना चाहता है । तो दूसरा अपने भक्तों को धनाढ्य बना डालता है ॥ ४९ ॥

एकश्चतुर्भुज इति प्रथितस्त्रिलोक्या—
मन्योभुजैस्तु दशभिः प्रथितस्त्रिलोक्याम् ।
को वानयोरधिकः ॥ ५० ॥

एक चार भुजा वाला है ऐसी प्रसिद्धि तीनों लोकों में है, तो दूसरा दस भुजा वाला है, ऐसी प्रसिद्धि तीनों लोकों में है ॥ ५० ॥

पञ्चायुधः प्रबलशक्तिमुपैति चैकः,
सर्वायुधः प्रबलशक्तिमुपैति चान्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ५१ ॥

एक अत्यन्त समर्थ पञ्जायुध को धारण करता है, दूसरा अत्यन्त समर्थ सर्वायुध को धारण करता है ॥ ५१ ॥

एकः प्रसिद्ध इह धेनुवधं विधाय,
व्याघ्रं निहत्य नितरामितरः प्रसिद्धः ।
को वानयोरधिकः… ॥ ५२ ॥

इस लोक में धेनुकासुर को मारकर एक प्रसिद्ध हुए, तो दूसरे व्याघ्र को मारकर अधिक प्रसिद्ध हो गये ॥ ५२ ॥

एको मुमूर्च्छ गहने हि किरातबाणा—
द्धासेन मूर्च्छयति यस्त्रिपुरं हि चान्यः ।
को वानयोरधिकः… ॥ ५३ ॥

घोर वन में किरातबाण से एक मूर्छित हो गये, तो दूसरे ने ह्रास मात्र से ही त्रिपुरासुर को मूर्छित कर दिया ॥ ५३ ॥

एकस्तु चक्रमधिगम्य ररक्ष लोका—
नन्यस्तु चक्रजनकः स्वपदाङ्गुलीभिः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ५४ ॥

चक्र सुदर्शन को प्राप्त कर एक ने सम्पूर्ण लोकों की रक्षा की, तो दूसरे ने अपने पैरों की अंगुलियों से चक्र सुदर्शन को उत्पन्न कर दिया ॥ ५४ ॥

एकश्चकार भुवि शङ्करचापभङ्ग—
मन्यश्चकार हरिसूनुशिरो विभङ्गम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ५५ ॥

एक ने भूलोक में शंकर जी के धनुष को तोड़ा, तो दूसरे ने विष्णुपुत्र ब्रह्मा के शिर को चूर-चूर कर डाला ॥ ५५ ॥

एकस्त्रिपादिति तराज्जगति प्रसिद्धो,
ह्यन्यस्य सेवकजनोऽपि तथा प्रसिद्धः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ५६ ॥

तीन पाद से सम्पूर्ण लोकों को माप कर एक तो 'त्रिपाद' इस नाम से प्रसिद्ध हो गये, तो दूसरे के सेवक जन भी त्रिपाद नाम से प्रसिद्ध हुए ॥ ५६ ॥

एकस्य साधुहयवक्त्र इति प्रसिद्ध-
रन्यस्य पुत्र इभवक्त्र इति प्रसिद्धः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ५७ ॥

सुन्दर हयग्रीवरूप धारण करने से एक की प्रसिद्धि हुई, तो दूसरे की, पुत्र गजानन होने के कारण उससे भी अधिक प्रसिद्धि हो गई ॥ ५७ ॥

एकस्य भाति चतुरानन एव सून-
रन्यस्य भाति हि षडानन एव सूनुः ।
को वानयोरधिकः ॥ ५८ ॥

एक पुत्र चार मुखवाला प्रतीत होता है, तो दूसरे का पुत्र छ मुखवाला प्रतीत होता है ॥ ५८ ॥

आदाय वेदमदिशद्विधये पुरैको-
ह्यन्यस्तु वेदनिचयं विधते त्रिलोक्याम् ।

को वानयोरधिकः... ॥ ५९ ॥

सृष्टि के प्रारम्भ में एक ने ब्रह्मा को वेद का उपदेश किया, तो दूसरे ने तीनों लोकों को वेद समूह को प्रदान किया ॥ ५९ ॥

एको जघान नरकं सुतरामिहैक-
मन्यो जघान नरकान् सुतरामनेकान् ।
को वानयोरधिकः... ॥ ६० ॥

एक ने इस लोक में केवल एक नरकासुर को मारा, तो दूसरे ने अनेकों नरकों को नष्ट कर दिया ॥ ६० ॥

एको हि याजक बलिं हि पुरा ययाचे,
ह्यन्यो ददाविह परत्र च सर्वसौख्यम् ।
को वानयोरधिकः... ॥ ६१ ॥

यज्ञ करने वाले बलि से एक ने पूर्व काल में याचना की, तो दूसरे ने इस लोक एवं परलोक में सर्वत्र सुख-ऐश्वर्य प्रदान किया ॥ ६१ ॥

एको दधौ जलजमेककराम्बुजेन,
ह्यन्यो दधौ ज्वलनमेककराम्बुजेन ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६२ ॥

एक ने अपने एक हस्तकमल से कमल को धारण किया, तो दूसरे ने अपने एक करकमल से अग्नि को धारण किया ॥ ६२ ॥

एको द्विजोऽपि निजमातृशिरश्छिदासी,
दन्यो विभाति नितरां द्विजराजमौलिः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण बन कर भी एक ने अपनी माँ का शिर काटा, तो दूसरे ने द्विजराज को मस्तक में धारण कर, शोभा को प्राप्त किया ॥ ६३ ॥

शंखात्तनोति नितरां ध्वनिमात्रमेक,
ओङ्कारमेव हृदयात्सकलार्थमन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६४ ॥

एक सदा शंख से ध्वनि मात्र का विस्तार करता है, तो दूसरा सम्पूर्ण अर्थ के वाचक ओंकार को ही हृदय से विस्तार करता है ॥ ६४ ॥

एकस्तु चक्रसहितोऽपि तनोति रक्षा-
मन्यस्तु खण्डपरशुर्वितनोति शिक्षाम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६५ ॥

एक चक्रपाणी होकर रक्षा करता है, तो दूसरा खण्डपरशु धारण कर शिक्षा प्रदान करता है ॥ ५ ६॥

एको दशाकृतिविभिन्न इति ह्यभाषि,
चान्यस्त्वभिन्नतममूर्तिरिति ह्यभाषि ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६६ ॥

एक दश अवतार धारण करने के कारण दश आकृति में भिन्न-भिन्न रूप से कहा गया है, तो दूसरा अत्यन्त अभिन्न अर्थात् अद्वैतमूर्ति रूप से कहा गया है ॥ ६६ ॥

ग्राहन्निहत्य गजराजमरक्षदेको,
मृत्युं निहत्य मुनिपुत्रमरक्षदन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६७ ॥

एक ने ग्राह को मारकर गजराज की रक्षा की, तो दूसरे ने मृत्यु को मारकर मुनि पुत्र की रक्षा की ॥ ६७ ॥

एकः पपौ भुवनभीकरकालकूट-
मन्यःपपौ स्तनविषं खलु पूतनायाः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६८ ॥

एक ने सम्पूर्ण संसार को भयभीत करनेवाले हलाहल विष का पान किया, तो दूसरे ने पूतना के स्तन विष का पान किया ॥ ६८ ॥

एकस्य सप्तजलधीन् पिबति स्म भक्त-
स्तस्यैकदेशमितरस्तु बबन्ध यत्नात् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ६९ ॥

एक के भक्त ने सातों समुद्रों को पी डाला, तो दूसरे ने समुद्र के एक देश को प्रयत्न पूर्वक बाँधा ॥ ६९ ॥

विश्वात्मकत्वमयते खलु तत्र चैको,
विश्वेश्वरत्वपदवीमयते तथान्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ७० ॥

एक विश्वात्मभाव को प्राप्त करता है, तो दूसरा विश्व के ईश्वरत्व पद को प्राप्त करता है ॥ ७० ॥

एको भुजङ्गशयने तनुतेऽतिसुप्ति-
मन्यः करोति भुजगेन्द्र विभूषणानि ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ७१ ॥

एक भुजंग शय्यापर अत्यन्त गाढ़ निद्रा में सोता है, तो दूसरा भुजगेन्द्र को भूषण रूप से धारण करता है ॥ ७१ ॥

एकोऽर्जुनस्य जयदः खलु सूतभावा-
दन्योऽर्जुनस्य जयदोऽभवदस्त्रदानात् ।

को वानयोरधिकः··· ॥ ७२ ॥

रथ का वाहक बनकर एक अर्जुन को विजय प्रदान करता है, तो दूसरा पाशुपत अस्त्र देकर अर्जुन को विजयी बनाता है ॥ ७२ ॥

एकः पुमानिति परो दयितेति पुत्रः
सास्ता तयोरिति च सर्वजगत्प्रसिद्धिः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ७३ ॥

एक पुरुषरूप धारण करता है, तो दूसरा स्त्रीरूप धारण करता है। दोनों के सम्बन्ध से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम सास्ता है। ऐसी प्रसिद्धि जगत में है ॥ ७३ ॥

एकश्चकार चरणाङ्जनखांचलेन
पौलस्त्यभङ्गमितरस्तु रणेऽतिकृच्छ्रात् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ७४ ॥

अपने पैर के अंगूठे के नख को चला कर एक ने

रावण को परास्त किया, तो दूसरे ने अत्यन्त कठिनाई से समर में रावण को परास्त किया ।। ७४ ।।

एकं द्विजातिमखिलेषु सुरेषु मध्ये
क्षात्र परं तु परमार्थगिरो गृणन्ति ।
को वानयोरधिकः··· ।। ७५ ।।

सम्पूर्ण देवताओं के मध्य में वेदवाणी एक को ब्राह्मण कहती है, तो दूसरे को वही वेदवाणी क्षत्रिय कहती है ।। ७४ ।।

एको जघान रिपुमीक्षणतः क्षणेन
यत्नाद्रिपुं च निजघान नखेन चान्यः ।
को वानयोरधिकः··· ।। ७६ ।।

एक ने क्षणमात्र में केवल नेत्र कटाक्ष से शत्रु को मार डाला, तो दूसरे ने अपने नख से यत्न पूर्वक शत्रु (हिरण्यकश्यिपु) को मारा ।। ७६ ।।

वृन्दावने चरति गोभिरुपेत्य चैक-
स्त्वन्यो भृशं पितृवने चरतीह भूतैः ।

को वानयो रधिकः... ॥ ७७ ॥

एक वृन्दावन में गौओं के साथ विचरता है, तो दूसरा अनेकों भूतों के साथ श्मशान में विचरता है ॥७७॥

एको भुजङ्गशयने स्वपितीह नित्य
मन्यो भुजङ्गकटको नयतीह नित्यम् ।
को वानयोरधिकः... ॥ ७८ ॥

एक शेष शैया पर सदा सोता है, तो दूसरा शेष को सदा अपने हाथ में कङ्कण बना कर रखता है ॥ ७८ ॥

एकस्य जात इति सन्ततलोकवार्ता,
नान्यस्य तादृशविदूषितलोकवार्ता ।
को वानयोरधिकः... ॥ ७९ ॥

एक का जन्म होता है, यह वार्ता सदा से लोक में सुनी जाती है, किन्तु दूसरे का जन्म नहीं होता, ऐसी बात भी लोक में प्रसिद्ध है ॥ ७९ ॥

एकः सुरैरुपगिरिं हि तपश्चकार,
तस्मै ददौ सुतमधिक्षिति साम्बमन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८० ॥

देव एवं ब्राह्मणों से प्रेरित हो एक पुत्र के लिए तप करता है, तो दूसरा पृथ्वी के अधिपति साम्ब पुत्र को उसे देता है ॥ ८० ॥

एकस्तु बाणगतिमेत्य करं वृणोति,
चान्योऽक्षिपत्पुरजयायतमेव बाणम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८१ ॥

एक बाण बन कर (शंकर जी के) हाथ में रहता है, तो दूसरा (शिव) उसी बाण को त्रिपुरासुर के विजय के लिए फेंकता है ॥ ८१ ॥

एकस्सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती,
चान्यस्सदा सवितृदन्तभिदां वरीयान् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८२ ॥

एक सदा सूर्यमण्डल में वास करता है, दूसरा सूर्य के दांत तोड़नेवालों में अग्रगण्य माना जाता है। (क्योंकि शिव के गण ने पूषा के दांतों को तोड़ा था) ॥ ८३ ॥

एकस्तु माधव इति प्रथितः स्वनाम्ना,
त्वन्यो ह्युमाधव इति प्रथितः स्वनाम्ना ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८३ ॥

एक 'माधव' (लक्ष्मीपति) इस नाम से प्रसिद्ध है, तो दूसरा 'उमाधव' (उमापति) इस नाम से प्रसिद्ध है ॥ ८३ ॥

गोपालकैस्तनुश्रितः सुतरामिहैको,
दिक्पालकस्तनुश्रितस्तु दिगम्बरोऽन्यः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८४ ॥

एक इस लोक में ग्वालों से घिरा रहता है, तो दूसरा दिगम्बर रूप हो दिक्पालों से घिरा रहता है ॥ ८४ ॥

एको गिलत्यनुदिनं नवनीतमेव-
मन्यो गिलत्यतिभयङ्कर कालकूटम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८५ ॥

एक प्रतिदिन नवनीत यानि मक्खन के गोले को निगलता है, तो दूसरा अत्यन्त भयंकर कालकूट को निगलता है ॥ ८५ ॥

एकस्तु शैलनिचयैर्जलधिं बबन्ध,
त्वन्यस्तमेव जलधिं शरधिं चकार ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८६ ॥

पर्वतसमूह के द्वारा एक ने समुद्र को बाँधा, तो दूसरे ने त्रिपुर विजय के समय उसी समुद्र को तरकस बना डाला ॥ ८६ ॥

एको विवेश सरयूसलिलान्तराले,
ह्यन्यो दधौ त्रिपथगांघटवञ्जटायाम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ८७ ॥

एक ने सरयू के जल मध्य में प्रवेश किया, तो दूसरे ने अपनी जटा में त्रिपथगामिनी गंगा को घट के समान धारण किया।। ८७।।

एकस्य रूपमधिगच्छति तामसत्व-
मन्यस्य रूपमधिगच्छति सात्त्विकत्वम्।
को वानयोरधिकः... ॥ ८८ ॥

एक का रूप तामस भाव को प्राप्त करता है, तो दूसरे का रूप सात्विक भाव को प्राप्त करता है ॥८८॥

नीलोऽपि नीलयमुनाजलमग्नगात्रः,
शुभ्रोऽपि शुभ्रतरदिव्यधुनिन्धरोऽन्यः।
को वानयोरधिकः... ॥ ८९ ॥

एक नील शरीर होता हुआ भी नीले यमुना जल में अपने शरीर को डुबोता है, तो दूसरा गौरांग होता हुआ भी अत्यन्त स्वच्छ गंगा को सिर में धारण करता है ॥ ८९ ॥

एको वराहतनुमेत्य भुवं लिलेख,
ह्यन्यो भुवं पुरजयाय रथं चकार ।
को वानयोरधिक··· ॥ ९० ॥

एक वराहरूप धारण कर पृथ्वी को बचाता है, तो दूसरा त्रिपुर विजय के समय पृथ्वी को रथ बना लेता है ॥ ९० ॥

एकश्चलां निजवधून्न शशाक रोद्धु,
म·यश्चकार वनितां स्फुटमर्द्धगात्रे ।
को वानयोरधिक ··· ॥ ९१ ॥

एक अपनी पत्नी अत्यन्त चंचल स्वभाव वाली लक्ष्मी को अचल नहीं बना पाता, तो दूसरा अपने अर्ध शरीर में अपनी पत्नी को सदा के लिए धारण कर लेता है ॥ ९१ ॥

एकं वदन्ति निगमान्तवचांस्यधीशं,
विश्वस्य विश्वमितरन्तु वदन्ति तानि ।

को वानयोरधिक··· ॥ ९२ ॥

वेदान्तवाक्य एक को विश्व के अधीश कहते हैं, तो दूसरे को विश्वरूप बतलाते हैं ॥ ९२ ॥

एकं यजुश्श्रुतिरशेषफलावलीना,
दातारमाह फलकोटि निविष्टमन्यम् ।
को वानयोरधिक··· ॥ ९३ ॥

सम्पूर्ण फल को बतलाने वाली यजुःश्रुति एक को फल का दाता कहती है, तो दूसरे को फलकोटि में निविष्ट मानती है ॥ ९३ ॥

ग्राहाशितं शिशुमजीवयदेकदासौ,
गत्वापरः पुरवरं स्वयमन्तकस्य ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ९४ ॥

एक वह है कि जिसने एक बार ग्राहसे खाये हुए शिशु को यमराज से बचा लिया, किन्तु दूसरे ने तो स्वयं यम लोक में जाकर यमराज को ही मार डाला

(इसीलिये भगवान् शंकर को यमान्तक कहा जाता है ॥ ९४ ॥

एकस्तु केशव इति प्रथितस्त्रिलोकेऽ,
न्यो व्योमकेश इति याति जगत्प्रसिद्धिम् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ९५ ॥

एक 'केशव' इस नाम से तीनो लोकों में प्रसिद्ध है, तो दूसरा 'व्योमकेश' (आकाश ही है केश जिसका) इस नाम से जगत में प्रसिद्ध है ॥ ९५ ॥

एको बभूव रथिकस्त्रिसृणां पुराणां,
संहारकर्मणि परः पृतनाङ्गमासीत् ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ९६ ॥

त्रिपुर विजय के समय एक रथी बनता है, तो दूसरा उस कार्य के लिए वाण वन जाता है ॥ ९६ ॥

एकस्तु कैटभवधे निपुणो बभूव,
ह्यन्यस्तु मृत्युहनने निपुणो बभूव ।

को वानयोरधिकः··· ॥ ९७ ॥

एक मधुकैटभ के मारने में अत्यन्त निपुण हुआ, तो दूसरा मृत्यु के मारने में अत्यन्त निपुण हुआ ॥ ९७ ॥

एकस्तु दीनगजरक्षणदत्तबुद्धि,
रन्यस्तु मत्तगजशिक्षणदत्तबुद्धिः ।
को वानयोरधिकः··· ॥ ९८ ॥

एक ने दुखी गजराज की रक्षा करने मे अपनी बुद्धि को लगाया, तो दूसरे ने मतवाले गजासुर को शिक्षा देने में अपनी बुद्धि को लगाया ॥ ९८ ॥

ब्रह्माणमाप निजनाभिजसूनुमेकोऽ-
न्यो ब्रह्मणो नखमुखेन शिरश्चकर्त्त ।
को वानयो रधिकः··· ॥ ९९ ॥

अपनी नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा जैसे पुत्र को एक ने प्राप्त किया, तो दूसरे ने अपने नख से ब्रह्मा के शिर को काट डाला ॥ ९९ ॥

एकः समक्त्युदहरन्निजमक्षिपुष्प-
मन्योऽम्बुजं नयनमस्य ददौ सचक्रम् ।
को वानयो रधिक इत्यनुचिंत्य वृद्धाः
सत्यं ब्रुवन्तु तमिमं वयसाश्रयामः ।। १०० ।।

॥ इति श्री हरदत्ताचार्यकृतहरिहर तारतम्यं स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

एक ने भक्ति पूर्वक अपने नेत्रकमल को उखाड़ कर शंकर जी पर चढ़ाया, तो दूसरे ने उसे चक्र के सहित नेत्रकमल प्रदान किया। इन दोनों में कौन श्रेष्ठ है, इसे विचार कर विवेक-शील वृद्धपुरुष सत्य सत्य कहें, तो हम उसी की भक्ति करें।। १०० ।।

इस प्रकार स्वामी विद्यानन्दगिरि कृत अनुवाद सहित
हरिहरतारतम्यस्तोत्र समाप्त हुआ।

—:*:—